Sone Kaa Kangan

117
54

समाज विकासमाला

सोने का कंगन

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

1535
GANDHI PEACE FOUNDATION
MYSORE CENTRE
162, RAMAVILAS ROAD
MYSORE-1
117
ನಂ. 546

समाज-विकास-माला : ७६

सोने का कंगन

पांच शिक्षाप्रद कहानियां

लेखक
श्रीकृष्ण

सम्पादक
यशपाल जैन

ಕರ್ನಾಟಕ ಗಾಂಧೀ ಸ್ಮಾರಕ ನಿಧಿ (ರಿ)
ಪರಿಗ್ರಹಣ ಸಂಖ್ಯೆ:
ACC. No.: 9703
ಗಾಂಧೀ ಗ್ರಂಥಾಲಯ, ಬೆಂಗಳೂರು-1

१९५७

सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल,
नई दिल्ली

पहली बार : १९५७
मूल्य
छ: आना

मुद्रक
नेशनल प्रिंटिंग वर्क्स,
दिल्ली

1535
GANDHI PEACE FOUNDATION
MYSORE CENTRE
162, RAMAVILAS ROAD
MYSORE-1

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है । इस दिशा में सरकार की ओर से यदि कुछ कोशिश हो रही है तो वही काफी नहीं है । यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा ।

बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही आसान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की हो और जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों । यह पुस्तकमाला इन्हीं बातों को सामने रखकर निकाली गई है । इन सबकी भाषा बड़ी आसान रखी गई ह और जहां तक हो सका है, कठिन शब्दों का प्रयोग नहीं होने दिया है । विषयों का चुनाव बड़ी सावधानी से किया गया है । विषय ऐसे लिये गये हैं जिनमें पाठकों की खास रुचि हो । छपाई-सफाई के बारे में विशेष ध्यान रक्खा गया है । हर किताब म चित्र भी देने की कोशिश की है ।

हम चाहते हैं कि इन किताबों को पढ़कर इनके बारे में पाठक हमें अपनी राय लिखें । यदि पुस्तकों की भाषा शैली, विषय और छपाई में उन्हें सुधार की गुंजाइश मालूम होती हो तो उसकी भी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें। हम उनपर विचार करेंगे और उन सुझावों के आधार पर किताबों को और ज्यादा अच्छी और उपयोगी बनाने का प्रयत्न करेंगे ।

—मंत्री

पाठकों से

इस दुनिया में सब तरह के लोग मिलते हैं। कुछ सच बोलते हैं तो कुछ झूठ; कुछ ईमानदार होते हैं तो कुछ बेईमान; कुछ दूसरों की भलाई करते हैं तो कुछ हर जगह अपना मतलब देखते हैं। लेकिन सच बात यह है कि आखिर में नाम और मान उन्हींका होता है, जो सचाई और ईमानदारी के रास्ते पर चलते हैं और बड़े-से-बड़े लालच के आगे भी नहीं झुकते।

इस किताब में पांच ऐसी ही कहानियां दी गई हैं। पांचों अपने ढंग की हैं और बड़ी सीख देनेवाली हैं। आप उन्हें पढ़ें और देखें कि छोटी-सी घटनाएं भी आदमी के दिल पर कितना असर डालती हैं।

इस माला की सारी किताबें एक-से-एक बढ़कर हैं। अपने यहां इन किताबों को अवश्य रखिए।

—सम्पादक

सोने का कंगन

: १ :

सोने का कंगन

किसी गांव में एक बूढ़ा लकड़हारा रहता था। नाम था हीरा। वह बड़ा गरीब था, पर बहुत ही ईमानदार। पौ फटने से पहले कंधे पर कुल्हाड़ी रखकर जंगल की तरफ चल पड़ता। जबतक दिन की रोशनी रहती, लकड़ी काटता और रात हो जाने के बाद घर लौटता। इतनी मेहनत के बाद भी उसे बहुत कम पैसे मिलते थे। उसका गुजारा मुश्किल से होता। इस कारण वह बहुत परेशान रहता।

एक दिन की बात। हीरा लकड़ियों का गट्ठा सिर पर लादे जंगल से गुजर रहा था। बगल में कुल्हाड़ी थी। अचानक किसी चीज से उसको ठोकर लगी। उसके आगे बढ़ते पैर जहां-के-तहां रुक गये। उसने झुक कर देखा। सामने जमीन पर सोने का एक कंगन पड़ा था। हीरा ने एक बार अपने चारों ओर दूर तक देखा, मगर आस-पास जहांतक उसकी निगाह गई, उसे कोई भी दिखाई न पड़ा, हीरा ने वह कंगन उठा लिया।

रास्ते में जो भी उससे मिलता, उससे वह उस कंगन

के बारे में पूछता--"क्यों भाई, तुम्हारा कोई कंगन तो नहीं खो गया ?"

मगर किसीने भी उसे अपना न बताया।

इसी प्रकार हीरा चलता गया, चलता गया, अचानक एक विचार उसके मन में उठा--अगर यह कंगन किसीका न हुआ तो मैं क्या करूंगा ? गरीबों के पास ऐसे कीमते गहने शोभा नहीं देते। न जाने कोई चोरी का ही माल समझ बैठे। नहीं जी, मैं इसे राजा को दे दूंगा।

तभी उसे सामने से फकीरा आता दिखाई पड़ा। फकीरा उसीके पड़ौस में रहता था। बड़ा ही लालची और कपटी। उससे भी हीरा ने वही सवाल किया, "क्यों भाई, तुम्हारा कोई कंगन तो नहीं खो गया ?"

फकीरा ने कंगन का नाम सुना तो चौंक पड़ा। उसने सोचा, हीरा को आज कोई कंगन मिला है। उसे हड़प लेना चाहिए। वह उदास होकर बोला, "हां, उसीकी तलाश में तो मैं जा रहा हूं, क्या तुम्हें मिला है ?"

हीरा ने कंगन निकालकर फकीरा के हाथ में दे दिया। बोला, "लो, देखो, यही है न !"

फकीरा खुशी से उछल पड़ा। बोला, "हां यही है।" हीरा को बड़ी खुशी हुई। चलो, अच्छा हुआ, जिसका कंगन था, उसीके पास पहुंच गया। मैं तो इस झंझट से छूट गया, न जाने रात को नींद भी आती या नहीं !

अब तो चैन से सोऊंगा।

संयोग से उस दिन राजा की सालगिरह थी। लोग तरह-तरह की चीजें राजा को दे रहे थे। बड़ी-बड़ी कीमती भेंटें थीं। राजा भेंट देनेवालों को बदले में बहुत सारा धन देता था।

फकीरा को जब यह पता चला तो वह बहुत खुश हुआ। उसने सोचा मैं भी राजा के पास कंगन लेकर जाऊं तो मुझे भी उसके बदले में बहुत धन मिलेगा। यह विचार आते ही उसने कंगन निकाला और महल की ओर चल दिया।

महल में पहुंचने पर जब उसका कंगन और लोगों की भेंट के साथ राजा के सामने रखा गया तो राजा ने हैरान होकर कहा, "यह तो महारानी का कंगन है। इसे कौन लाया है?"

तुरंत फकीरा को पेश किया गया। राजा ने उससे पूछा, "यह कंगन तुम्हें कहां से मिला?"

फकीरा घबरा गया। उसने सोचा इसमें जरूर कोई गड़बड़ है। वह बोला, "सरकार मैं बेकसूर हूं, मेरे भाई हीरा ने यह मुझे दिया था।"

"हीरा को बुलाओ।" राजा ने झुंझलाकर आज्ञा दी।

फौरन एक सिपाही हीरा के पास दौड़ा गया।

हीरा उस समय भूख से तड़प रहा था। जब उसने

राजा की आज्ञा सुनी तो गिरता-पड़ता राजा के सामने पहुंचा।

राजा ने पूछा, "क्यों भाई हीरा, यह कंगन तुम कहां से लाये ?"

हीरा ने सारा हाल कह सुनाया। सुनकर सारे दरबारी चकित रह गए। फकीरा की गर्दन लज्जा से झुक गई। राजा ने कहा, "फकीरा तूने नीच काम किया है। तुझे इसकी सजा दी जायगी। और हीरा, तुमने अच्छा काम किया है। तुम्हें इसका इनाम मिलेगा।"

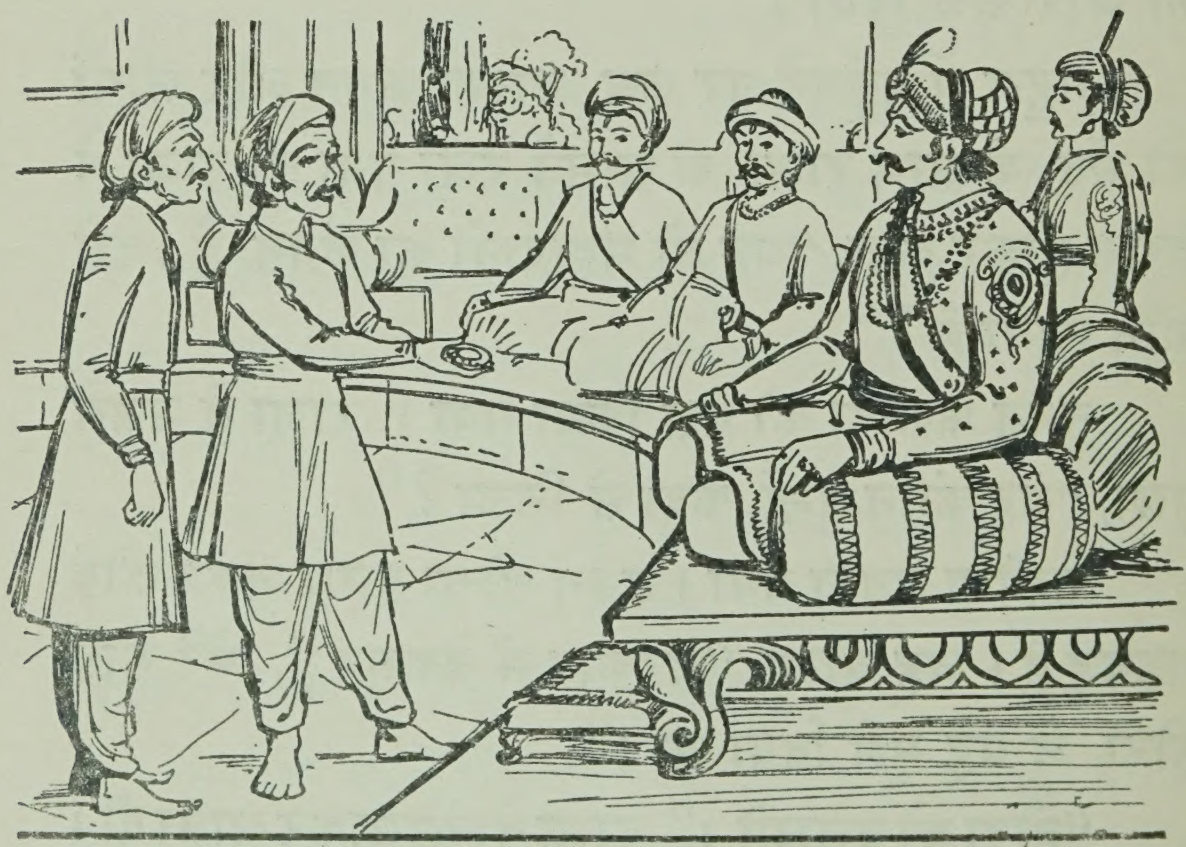

"क्यों भाई हीरा, यह कंगन कहां से लाये ?"

फकीरा कांपने लगा। हीरा खुश था आखिर सही

बात लोगों को मालूम हो गई।

राजा ने फिर कहा, "हीरा, तुम जितना धन चाहो मांग लो, हम तुम्हारी सच्चाई से बहुत खुश हैं।"

राजा की बात सुनकर हीरा ने आदर से सिर झुकाया, बोला, "महाराज, अगर आप सचमुच मुझसे खुश हैं और मुझे कुछ देना चाहते हैं तो इस आदमी को छोड़ दीजिए। मैं बस इतना ही चाहता हूं।"

राजा ने चकित होकर कहा, "ओह, जिस आदमी ने तुम्हें धोखा दिया, उसके लिए तुम्हारा इतना प्रेम देखकर हमें बहुत खुशी है। उसे सजा मिलनी चाहिए थी; लेकिन तुम चाहते हो तो हम उसे छोड़ देते हैं। लो, तुम्हारे लिए यह एक गांव है। जाओ, चैन से रहो।"

: २ :

कुत्ते की स्वामि-भक्ति

किसी गांव में एक जमींदार रहता था। उसने एक कुत्ता पाल रखा था। उसका नाम था मोती। मोती बड़ा, लंबे बालोंवाला और शिकारी कुत्ता था। जब सारा घर मीठी नींद में सोया रहता था, मोती बाहर बरामदे में जागकर घर की चौकसी किया करता था। कई बार तो उसने घर की चोरी होने से भी बचाया था। इसीसे घर में उसकी बड़ी कद्र होती थी, रोज दोनों समय नियम से उसे दूध मिलता था और बिस्तर पर वह सोता था।

मगर जैसे-जैसे मोती की उम्र ढलती गई वह और कमजोर होता गया, मालिक का बर्ताव भी उसके साथ कठोर होता गया, धीरे-धीरे उसका दूध बंद हो गया। फिर एक दिन उसे रोटी मिलनी भी बंद हो गई। अब वह योंही जमीन पर मुंह रखे पड़ा रहता। जब मालिक को किसी तरह भी उसपर दया न आई तो बेचारा मजबूर होकर एक दिन जंगल की ओर चल पड़ा। वहां पहुंचते ही जरा-सी देर में उसके निकाले जाने की खबर एक छोर से दूसरे छोर तक फैल गई। सभी सगे-संबंधी और मित्र उससे मिलने आये।

लोमड़ीदीदी ने उसकी हालत देखकर आंखों में आंसू भरकर कहा, "हमें क्या पता था कि कभी दुख के ये दिन भी देखने पड़ेंगे।"

सियारकाका बोले, "अजी, आदमी की जात होती ही बड़ी मतलबी है।"

भालूमामा ने थूथड़ी हिलाकर कहा, "अक्ल के जोर पर ये लोग न सही देखते हैं, न गलत। जो जी में आता है, कर डालते हैं।"

भेड़ियाशाह मोती का बचपन का दोस्त था। था बड़ा मक्कार। बोला, "दोस्त चुपचाप बैठने से काम नहीं चलेगा। तुम्हें इसका बदला लेना चाहिए। तुम खातिर जमा रखो। मैं तुम्हारी पूरी-पूरी मदद करूंगा।"

मोती ने कहा, "नहीं भाई, नहीं, बदले का तो नाम भी न लेना। अगर मालिक ने अपना फर्ज पूरा नहीं किया तो इसका मतलब यह नहीं कि मैं भी उसके साथ बुरा करूं। कैसा भी हो, आखिर वह मेरा मालिक है। मैंने बरसों उसका नमक खाया है।"

भेड़ियाशाह ने उसे तरह-तरह से समझाया, लेकिन जब मोती किसी तरह भी राजी न हुआ, तो वह झुंझला-कर चला गया। मोती भी शहर की तरफ चल पड़ा। वहां पहुंचकर स्वामी के घर के आगे ही जाकर पड़ गया। जूठन में जो कुछ रूखा-सूखा, कम-ज्यादा मिल जाता, उसे ही खाकर वह अपने बाकी दिन बिताने लगा।

इसके तीन-चार दिन बाद ही एक रात को मोती बाहर लेटा हुआ अपने बीते दिन याद कर रहा था कि अचानक उसे घर के भीतर शोर सुनाई दिया। उसने पहचान लिया। आवाज सेठानी की थी। चिल्ला-चिल्लाकर वह कह रही थीं—"दौड़ो, बचाओ, मेरे लाल को भेड़िया उठाकर ले गया। हाय, मैं तो लुट गई। हाय, अब मैं क्या करूं?"

सारे घर में भगदड़ मच गई। किसीने कुछ उठाया तो किसीने कुछ, जमींदार ने अपनी बंदूक निकाली।

हालांकि मोती में उठने-बैठने की ताकत नहीं रही थी, फिर भी इस समय उसमें बड़ा हौसला पैदा हो

गया। उसने आंखें फैलाकर इधर-उधर देखा। चांदनी खिली हुई थी और दूर पेड़ों की तरफ भेड़िया बच्चे को उठाये लपका जा रहा था।

मोती भेड़िये की ओर दौड़ा

मोती से न रहा गया। वह उछलकर उठ खड़ा हुआ और भेड़िए की ओर दौड़ा। थोड़ी ही देर में उसने उसे जा पकड़ा और उसका रास्ता रोककर बोला, "दोस्त यह क्या गजब करते हो? यह तो मेरे मालिक का बच्चा है।"

भेड़ियाशाह ने कहा, "किसीका भी बच्चा हो, मैं इसका कलेवा करूंगा। तुम मेरे सामने से हट जाओ। अबतक मैं तुम्हारे मालिक का बहुत लिहाज करता रहा,

लेकिन जब उसने तुम्हें दूध से मक्खी की तरह निकाल फेंका तो अब झूठी स्वामि-भक्ति दिखाने से क्या फायदा।

मोती ने कहा, "तुम झूठ बोलते हो। तुमने कभी भी मेरे मालिक का लिहाज नहीं रखा। असल में तुम्हें अब-तक कभी ऐसा अवसर ही नहीं मिला, क्योंकि पहरे पर मैं रहा करता था। तुम कहते हो कि मेरे मालिक ने मुझे निकाल दिया, लेकिन मैं तो अब भी उसीका नमक खाता हूं।"

भेड़ियाशाह मुंह बिचकाकर बोला, "खाते तो उसी-का नमक हो, लेकिन झूठा और बासी ऐसे खाने से तो मर जाना अच्छा है।"

कुत्ते ने इसपर बिगड़कर कहा, "अरे, जीभ के लोभी, तू क्या जाने स्वामि-भक्ति की महिमा। अगर तू इस बच्चे को लेकर आगे बढ़ा तो मैं तुझे जान से मार डालूंगा।"

"अच्छा," भेड़ियाशाह ने कहा, "तेरे भीतर अगर इतना ही दम होता तो मालिक ही क्यों तुझे इस तरह निकाल बाहर फेंकता मैं कहता हूं कि या तो तू मेरे रास्ते से हट जा, नहीं तो इस बच्चे से पहले मैं तेरा ही भुरता बना दूंगा।"

भेड़ियाशाह ने अभी अपनी बात पूरी भी न की थी कि सहसा मोती अपनी सारी शक्ति लगाकर उसके ऊपर

कूद पड़ा। भेड़िया नहीं समझता था कि मोती इतना साहस करेगा। उसके इस तरह अचानक कूदने से वह अपनी पीठ के बल लुढ़क गया और बच्चा उसके मुंह से छूटकर दूर जा पड़ा। अब तो दोनों में गुत्थमगुत्था होने लगी। लेकिन मोती कमजोर था, बड़ी जल्दी लहूलुहान होगया। भेड़िया उसके कलेजे में पंजा गड़ाकर उसकी जीवन-लीला समाप्त करने ही वाला था कि तभी पीछे से दन से एक गोली दगी और उसकी पीठ में आकर लगी। भेड़िए ने एक कला-बाजी खाई और जमीन पर आ रहा।

पीछे से जमींदार और उसके नौकर-चाकर दौड़ते हुए आये। पास आकर जब उन्होंने बच्चे को सकुशल देखा और मोती को लहूलुहान जमीन पर तड़पते हुए पाया तो जमींदार की आंखें भर आईं। वह कुत्ते को अपनी गोद में लेकर बैठ गया और उसे प्यार करते हुए बोला, "तूने ही मेरे बच्चे को बचाया है। किसीने सच कहा है, पुराना नौकर बूढ़ा हो जाने पर भी नये जवान नौकर से कहीं अच्छा है।"

उसके आदमियों ने मोती को उठाया और उसे पशुओं के सरकारी अस्पताल में ले गए, जहां वह कुछ ही दिनों में चंगा हो गया और वापस जमींदार के घर आ गया। अब उसके लिए फिर वही बिस्तर था, वही

दूध और वही आराम। उसके दिन बड़े सुख में बीते।

: ३ :

भूत

किसी गांव में एक सेठजी रहते थे। नाम था उनका पोपटलाल। बड़े ही कंजूस, पूरे मक्खीचूस, कौड़ी-कौड़ी पर जान देनेवाले।

सेठजी की उम्र होगी यही करीब चालीस-पचास साल। सिर के बाल झड़ गए थे और खोपड़ी ऐसी सफाचट निकल आई थी, जैसे ऊसर खेत। आंखें छोटी जरूर थीं, मगर थीं गोल चेहरे के नीचे पेट था, पेट के नीचे टांगें, मानों किसी पीपे में दो मेंखें गाड़ दी गई हों। मगर यह खाली पीपा न था। उसमें बेईमानी और बेरहमी ठूंस-ठूंसकर भरी हुई थी।

सेठजी कोई कारोबार नहीं करते थे। बाप एक-डेढ़ लाख की जायदाद और करीब तीन-चार लाख की नकदी छोड़ गए थे। उसीके सूद से सेठजी के परिवार का काम चलता था। वह भोलेभाले किसानों को कर्ज के रूप में पांच देते, पंद्रह लिखते, बीस वसूल करते।

ऐसी बात नहीं थी कि किसानों को सेठजी की चालबाजी का पता न हो। पता तो उन्हें सबकुछ था। बार-बार वे सोचते भी कि चाहे जो हो जाय, काम बने या

बिगड़े, अब कभी उससे कर्ज न लेंगे। लेकिन फिर कोई-न-कोई ऐसी जरूरत आ पड़ती कि उन्हें सेठजी का ही दरवाजा खटखटाना पड़ता ।

यद्यपि सेठजी के पास इतना रुपया था, फिर भी वह उसे खर्च करने का कभी नाम तक न लेते। यही कारण था कि लोगों को उनके खिलाफ बड़ी शिकायतें थीं। चमारों को शिकायत थी कि सेठजी एक बार जूता खरीद कर उसे सालों घिसते हैं और जबतक उसके चिथड़े-चिथड़े नहीं हो जाते तबतक उसका पिंड नहीं छोड़ते। भिखमंगों को शिकायत थी कि उन्हें सेठजी के यहां से कभी भिक्षा नहीं मिलती। दर्जी का कहना था कि सेठ-जी एक बार एक कुरता बनवा लेते हैं तो वह जिंदगी भर के लिए काफी हो जाता है । तांगे रिक्शेवालों को शिकायत थी कि सेठजी की टांगें इतनी मजबूत हैं, जितनी रेल की पटरियां। वह जेठ की तपती धूप में भी एक आना बचाकर एक-डेढ़ मील तक पैदल चले जाते थे।

सेठजी का एक लड़का था, जिसका नाम था भग-वत। वह बड़ा ही दयालु था। उसका स्वभाव अपने पिता से बिल्कुल उलटा था। जब उसके पिता गरीबों पर अत्याचार करते, तो उसे दुख होता, मगर वह लाचार था। वह जब भी पिता से इसके बारे में कोई चर्चा करता, उसे डांट दिया जाता। सेठजी कहते, "जा-जा तू, अभी

इन बातों को नहीं समझ सकता। घोड़ा घास से यारी करेगा, तो खायगा क्या।"

भगवत बेबस होकर रह जाता। उसकी कुछ समझ में न आता। आखिर क्या करे और क्या न करे। किस तरह इस अत्याचार को रोके?

इसी बीच एक दिन उसने गिरधर के लड़के के मरने की खबर सुनी। साथ ही यह भी कि उसकी मौत का कारण उसका पिता ही है। उसका दिल रो उठा। बात यों थी:

दो साल पहले गिरधर ने सेठजी से दोसौ रुपये कर्ज लिये थे। सेठजी ठहरे बेईमान। दोसौ के पांचसौ बना दिये। ब्याज चुकाते-चुकाते ही उसकी कमर टूट गई थी, मूल ज्यों-का-त्यों था।

अचानक एक दुर्घटना और घटी। बेचारे गिरधर के लड़के को बुखार ने आ दबोचा। जवान लड़का! बुखार भी मामूली नहीं। तीसरे दिन ही उसकी दशा जरा ज्यादा बिगड़ गई। रात से वह बड़बड़ाने लगा। अब तो गिरधर के प्राण कलेजे को आ गए। दो-चार दिन तक तो उसने मामूली इलाज किया, परंतु कोई खास फायदा नहीं हुआ। बुखार दिन-पर-दिन बढ़ता ही जाता था। गिरधर परेशान था। अकेला लड़का और घर में फूटी कौड़ी भी नहीं, इलाज करे तो कहां से? सेठजी से अलबत्ता

कर्ज मिल सकता था। मगर गिरधर उनसे लेना नहीं चाहता था। एक बार ही लेकर पछता रहा था।

तब फिर ? गिरधर ने घर की एक-एक चीज की तरफ नजर दौड़ाई, परंतु कुछ टूटे-फूटे बरतन, बक्सों में कुछ पुराने कपड़े और एक टूटी-सी खाट के अलावा और था ही क्या ! हां, एक चीज जरूर थी, और वह भी काफी कीमती। वह था एक जड़ाऊ कंगन, जो उसकी पत्नी ने मरते समय उसके हाथ में देकर कहा था, "इसे संभालकर रखना और मेरी तरफ से बहू को पहना देना।"

गिरधर ने अबतक उसे बहुत ही संभालकर रखा था। अब जब लड़के पर विपत्ति आई तो पहले उसीका बेचना जरूरी था। कंगन को बेचने से मजे में दो-ढाईसौ रुपए मिल जायंगे। इतने रुपयों से लड़के की जान बच जायगी। बहू यदि कंगन न भी पहने तो भी कोई बात नहीं।

लेकिन कंगन कौन खरीदे ? शहर वहां से दूर था और कहीं वहां के जौहरी उसे गांववाला समझकर ठग न लें। घुमा-फिराकर एक सेठजी ही बाकी रह जाते थे। मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक--आखिर वह कंगन लेकर सेठ पोपटलाल के पास पहुंचा।

सेठजी ने कंगन हाथ में लेकर अंदाज किया। मन

में सोचा, पांचसौ से तो क्या कम होगा। अपने मन की बात छिपाकर बोले, "सवासौ से ज्यादा का तो है नहीं। कहो, तो दूं।"

गिरधर ने कहा, "यह तो बहुत कम है, सेठजी! कुछ तो ज्यादा दीजिए।"

सेठजी ने कहा, "इससे एक कौड़ी भी ज्यादा नहीं मिल सकती। चीज तो सौ की है, मगर तुम अपने आदमी हो, इसलिए सवासौ लगा दिये हैं।"

क्या करता बेचारा? गरज बावली होती है। राजी हो गया। बोला, "अच्छा तो सवासौ ही दे दीजिए।"

सेठजी ने कहा, "देने का क्या सवाल? दोसौ जो मेरे हैं तेरी तरफ, उसी हिसाब में ये सवासौ काट लेता हूं, बाकी पचहत्तर और रह गए। सो दो-चार दिन में दे जाना।"

गिरधर ने सिर पीट लिया। बहुत रोया गिड़-गिड़ाया। हर तरह से सेठजी की चिरौरी की। कहा, "सेठजी, लड़का मर जायगा।"

सेठजी ने उत्तर दिया, "सब भगवान भली करेंगे।"

"यह तो अन्याय है।"

सेठजी ने कहा, "तीन साल से टालमटोल हो रही थी। अब हाथ में आई चीज कैसे छोड़ दूं? अन्याय है तो जा अदालत में।"

गिरधर के पास अदालत में जाने के लिए रुपया होता तो वह पहले डाक्टर के पास न जाता ।

भगवान ने कोई रियायत नहीं की । गिरधर का लड़का मर गया ।

सेठजी के लड़के भगवत ने सोचा––अब ऐसे काम नहीं चल सकता । उसे कुछ-न-कुछ करना ही होगा । सोचता रहा, सोचता रहा । आखिर उसे एक उपाय सूझ गया ।

आधी रात का समय था । सेठजी आराम से पलंग पर लेटे अपनी दिन भर की पाप की कमाई पचाने की कोशिश कर रहे थे । सहसा कमरे में जोर का धमाका हुआ । सेठजी की नींद उचट गई और वह हड़बड़ाकर उठ बैठे । सामने जो निगाह गई, तो घिग्घी बंध गई ।

दीवार के सहारे एक काली शक्ल, काले कपड़े पहने, दोनों हाथों को फैलाए, आंखें फाड़े उनकी ओर घूर रही थी । सेठजी ने घबराकर आंखें मीच लीं । दो मिनिट बाद जब उन्होंने आंखें खोलीं तो वह काली शकल अपने स्थान पर नहीं थी । सेठजी ने चैन की सांस ली ।

लेकिन अगले ही क्षण वह जोरों से चिल्ला उठे । कोई उनकी चुटिया पकड़कर जोरों से खींच रहा था । सेठजी की निगाह पीछे घूमी तो वही काली शकल नजर आई । सेठजी के होश गुम हो गए ।

वह शकल थोड़ी हिली और साथ ही उसके होंठ। "क्यों, पहचानते हो मुझे ?"

सेठजी के मुंह से आवाज नहीं निकली।

काली शकल की आंखों से चिनगारियां-सी निकलने लगीं। "मैं क्या पूछ रहा हूं ?" वह चीखकर बोली।

सेठजी की घिग्घी बंध गई। कांपती हुई आवाज में बोले, "न-न-न, नहीं।"

काली शकल हँसी--"अब तुम मुझे काहे को पहचानोगे। मैं गिरधर के उसी लड़के का भूत हूं, जिसकी मौत का कारण तुम हो, केवल तुम।"

सेठजी के हाथ-पैर बुरी तरह कांपने लगे। उनकी आंखों की पुतलियां फिरने लगीं। भूत ने कहा, "तुमने बहुत-से गरीबों का खून चूसा है। आज मैं तुम्हें ले जाने के लिए आया हूं। झटपट तैयार हो जाओ और आओ मेरे साथ।"

सेठजी डर से थरथर कांपते हुए बोले, "मैं मर जाऊंगा। मुझपर रहम करो।"

"रहम ! हा हा हा।" भूत हँसा, "कभी तुमने भी किसीपर रहम किया है ? जल्दी करो, कपड़े पहन कर तैयार हो जाओ। मैं तुम्हें अपने साथ यमलोक ले जाना चाहता हूं, वहां तुम्हारे-जैसे और भी बहुत से प्राणी हैं।"

सेठजी की कंपकंपी और भी ज्यादा तेज हो गई। वह हाथ जोड़ते हुए बोले, "दया करो, दया करो। तुम जो भी कहोगे वह सब कुछ करने को तैयार हूं। चाहो तो दस-पांच रुपये ले जाओ।"

"नहीं, भूत चिल्लाया, "तुम मुझे रिश्वत देना चाहते हो? चलो, तुम्हारा न्याय अब यमराज के दरबार में होगा।"

भूत ने कहा—"तुम्हारा न्याय यमराज के यहां होगा।"

अब तो सेठजी से कुछ कहते न बना। उनकी आंखों से टपाटप आंसू झरने लगे। इसपर भूत ने कहा, "अच्छा-अच्छा, मुझे तुमपर अचानक रहम आ गया है। मैं बस एक शर्त पर तुम्हें छोड़ सकता हूं।"

सेठजी हाथ फैलाते हुए बोले, "वह क्या है ? मैं तुम्हारी सब शर्त्तें मानने के लिए तैयार हूं, बस मेरे प्राण छोड़ दो।"

"अच्छी बात है। तुम्हारा जितना रुपया लोगों पर निकलता है, वह सब माफ कर दो, मैं तुम्हारी जान बख्श दूंगा।"

सेठजी इस अवस्था में भी अपना माथा पीटते हुए बोले, "अरे, इससे तो मेरी बधिया बैठ जायगी।"

भूत हँसा, "तो तुम अपनी बधिया मत बैठाओ। उठकर मेरे साथ सीधे-सीधे चल दो। तुम्हारी बधिया बची रहेगी।"

जब सेठजी के पास और कोई चारा न रहा तो उन्होंने कहा, "अच्छा, जो कुछ तुम चाहते हो, वह सब कर दूंगा।"

भूत बोला, "ठीक, मैं कल फिर आऊंगा। अगर तुमने ऐसा न किया तो कल मैं तुम्हें जरूर अपने साथ ले ही जाऊंगा।"

सेठजी ने डर के मारे अपनी आंखें मींच लीं। कुछ देर बाद जब उन्होंने आंखें खोलकर देखा तो भूत वहां नहीं था।

लेकिन अगले दिन भूत को आने की जरूरत नहीं पड़ी। लोगों को यह सुनकर बड़ा अचरज हुआ कि उसी

सेठ ने, जो कौड़ी-कौड़ी पर मरता था, आज सबका रुपया कैसे माफ कर दिया।

इस भेद को सेठजी के लड़के भगवत के अलावा और कोई नहीं जानता।

: ४ :

परीक्षा

किसी गांव में दीनू नाम का एक बहुत ही गरीब किसान रहता था, मगर था वह ईमानदार। अकसर गांव के लोगों को जब किसी काम से बाहर जाना होता, तो वे अपने जेवर-लत्ते आदि कीमती सामान उसीके पास रख जाते और जब वापस लौटते तब ज्यों-का-त्यों सम्हाल लेते। कभी एक कौड़ी भी इधर-से-उधर न होती। दीनू पर चाहे कितनी विपत्तियां आतीं, वह कभी भी इन चीजों की ओर आंख उठाकर न देखता था। यही कारण था कि दूर-दूर तक उसका नाम हो गया था।

एक दिन की बात है। दीनू खेत जोतने के बाद थक-कर सुस्ताने बैठा था कि एक बूढ़ा वहां आया। उसकी लंबी सफेद दाढ़ी उसकी छाती को छू रही थी। कपड़े उसके बिल्कुल सफेद थे। हाथ में जेवरों की एक पोटली थी। दीनू से आकर उसने पूछा, "क्योंजी, तुम्हारा नाम दीनू है ?"

दीनू ने सिर उठाकर एक नजर बूढ़े की ओर देखा और कहा, "जीहां, मुझे ही दीनू कहते हैं। कहिए, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं ?"

"बात यह है कि मैं कुछ समय के लिए अपने देश जाना चाहता हूं। वहां मेरा लड़का रहता है। मगर दिक्कत यह है कि मैं अपनी चीज-बस्त कहां रखूं ? अकेला आदमी ठहरा। साथ भी नहीं ले जा सकता। रास्ता खतरनाक है। चोर-डाकुओं का बराबर डर बना रहता है। अगर तुम इन्हें अपने पास रख लो तो मैं तुम्हारा बड़ा अहसान मानूंगा, जब मैं लौटकर आऊंगा, तब तुमसे अपनी पोटली ले लूंगा।"

"अच्छी बात है।" दीनू ने कहा, "इसमें अहसान की क्या बात है ? आदमी का आदमी से ही काम निकलता है। आप बड़े शौक से अपनी पोटली रख जाइए।"

बूढ़े ने एक लंबी सांस ली, मानो उसकी कोई बहुत बड़ी चिंता दूर हो गई हो। दीनू को पोटली सौंप-कर वह वहां से चलता बना।

मगर कहते हैं, जब बुरे दिन आते हैं, तब किसीसे कहकर नहीं आते। जिस दिन से दीनू ने बूढ़े की पोटली अपने पास रखी उसपर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा। तीसरे-चौथे रोज ही एक रात उसके दोनों बैल चोरी हो गए। दीनू ने बहुत खोज की, मगर ढूंढ़ने से ही बैल मिल

जाते तो वे चोरी ही क्यों होते ?

दीनू की तो मानो कमर ही टूट गई। उसकी सारी खेतीबाड़ी चौपट हो गई। दूसरे बैल खरीदे जा सकें, इतना पैसा नहीं था। दो समय रोटी भी जाने कैसे मिल जाती थी।

अब तो दीनू की हालत बिगड़ने लगी। दस-पंद्रह रोज तक तो उसने किसी तरह घर की चीज-बस्त बेच-कर गुजारा किया। लेकिन ऐसा कबतक चलता ? धीरे-धीरे सब चीजें बिक गईं। न बिकी तो बस वह एक पोटली।

आज तीन दिन से दीनू के घर चूल्हा नहीं चढ़ा था। उसके स्त्री-बच्चे सभी भूखे पड़े थे। वह भी खुद पेट पर पट्टी बांधे इधर-उधर किसी काम की तलाश में घूम रहा था। मगर जब भाग्य में ही बुरे दिन देखने लिखे हों तब कोई काम नहीं बनता।

उस दिन शाम को जब दीनू घर लौटा तो उसकी हालत बड़ी खराब थी। बुरी तरह पसीने से नहाया हुआ था। पेट पीठ से लग गया था, पैर लड़खड़ा रहे थे। उसकी स्त्री ने जब उसकी यह हालत देखी तो वह डर गई, बोली, "ऐसे कैसे काम चलेगा। देखो, मेरा कहा मानो और आज ही उस पोटली में से कोई छोटी-मोटी चीज बेच आओ। जो कुछ आजायेगा उससे कुछ दिन सब

काम आसानी से चलने लगेगा। बैल भी खरीद लिये जायंगे और घर की भी हालत सुधर जायगी।"

स्त्री ने कहा, "ऐसे कैसे काम चलेगा!"

दीनू नाराज होकर बोला, "क्या कहा! पोटली बेच दूं। भला ऐसा कैसे हो सकता है? ऐसा तो मैं मरकर भी नहीं करूंगा?"

स्त्री ने कहा, "मैं नहीं समझती, इसमें बुराई क्या है? पोटली तुमने खोलकर नहीं देखी, कोई लिखा-पढ़ी हुई नहीं। क्या सबूत कि उस पोटली में उतने ही जेवर थे जितने वह बताकर गया है?"

दीनू तिलमिला गया। स्त्री की यह बात उसके दिल में तीर की तरह चुभ गई। हाथ जोड़कर वह घुटने के

बल बैठ गया और आकाश की ओर सिर उठाकर बोला, "भगवन मुझे क्षमा करो। इस स्त्री के हृदय में अच्छी भावना पैदा करो।"

स्त्री ने उसकी यह बात सुनी तो मुंह बिचकाकर रह गई।

दुर्भाग्य कहिए या सौभाग्य, अगले दिन दीनू को किसी काम से शहर जाना पड़ा। दो-तीन रोज बाद जब वह लौटा तो उसने सुना कि पिछली रात को उसके मकान में चोरी हो गई और उसीमें जेवरों की वह पोटली भी चली गई।

दीनू के दिल पर बर्छियां चल गईं। स्त्री अलग रो-रोकर घर भरे दे रही थी। उसकी दशा देख-देखकर दीनू को पुरानी बातें याद हो आईं। आखिर उसने ठीक ही कहा था। क्या ही अच्छा होता अगर मैं उस समय उसकी बात मान लेता। पोटली अब भी तो गई। मगर तब कम-से-कम घर की हालत तो सुधर जाती। किसी दूसरे के हाथ तो वह न पड़ती। लेकिन अगली ही घड़ी उसका दिल उसे धिक्कारने लगा। उसे अपने ऊपर क्रोध आया। ऐसे नीच विचार उसके मन में आये ही क्यों?

सहसा तभी बाहर से किसीने पुकारा। दीनू ने जाकर देखा तो वही बूढ़ा था। उसके पैरों के नीचे से जमीन खिसक गई। भीतर की सांस भीतर, बाहर की

बाहर। अब क्या होगा ? वह बूढ़ा अपनी पोटली मांगेगा तो वह क्या जवाब देगा ? क्या वह उसकी बात पर यकीन कर लेगा ? बूढ़े की निगाह दीनू पर पड़ी, उसने कहा, "भाई, मैं अपने बेटे से मिलकर वापस आ गया हूं। अपनी पोटली लेने आया हूं।"

दीनू घबरा गया, क्या जवाब दे ? फिर अटककर बोला, "वह...वह...तो...बाबा...चोरी...।"

बूढ़ा बीच में ही बोल पड़ा, "क्या मतलब ? क्या तुम यह कहना चाहते हो कि मेरी पोटली चोरी चली गई ? किसने की चोरी, तुमने कि किसी और ने ? झूठ बिल्कुल झूठ ! यह सब तुम्हारी मक्कारी है। ऐसा करके तुम उसे रखना चाहते हो। मुझे नहीं मालूम था... मगर मैं इतनी आसानी से छोड़नेवाला नहीं। मैं राजा के पास फरियाद लेकर जाऊंगा। उसके सामने तुम्हें जवाब देना पड़ेगा। वही हमारे झगड़े का निबटारा करेगा।"

दीनू ने बूढ़े के पैर पकड़े और गिड़गिड़ाकर बोला—नहीं नहीं, बाबा, ऐसा न करना, मैं कहीं मुंह दिखाने लायक भी न रहूंगा।"

बूढ़ा गुर्राया, "तो फिर तुम्हारा मतलब है कि मैं अपनी जिंदगी भर की कमाई को योंही लुट जाने दूं और हाथ-पैर भी न हिलाऊं! नहीं ऐसा कभी नहीं हो सकता।"

"नहीं, मैं यह नहीं चाहता। मैं सिर्फ कुछ दिनों की मोहलत चाहता हूं। जैसे भी होगा, मैं आपकी पाई-पाई, रत्ती-रत्ती चुका दूंगा।"

"कैसे ? जानते हो उन जेवरों की कीमत क्या है ? डेढ़ हजार से कम के न होंगे।"

डेढ़ हजार का नाम सुनकर दीनू की रही-सही हिम्मत भी जाती रही। उसने तो आज तक कभी सौ रुपये भी एक साथ नहीं देखे थे, फिर डेढ़ हजार तो बहुत बड़ी रकम होती है। मगर सोचने-विचारने से लाभ क्या था। कितना भी क्यों न हो, रुपया तो उसे अवश्य ही चुकाना होगा। वह बोला, "आप धीरज रखें, मैं, मेरी स्त्री, मेरे बच्चे दिन-रात मेहनत करके और भूखे रहकर जितनी जल्दी हो सकेगा, आपका रुपया चुकाने की कोशिश करेंगे।"

बूढ़े का चेहरा खिल उठा। लेकिन यह क्या ? अगले ही क्षण उसने अपनी दाढ़ी पकड़कर खींच दी। दाढ़ी उखड़कर नीचे गिर पड़ी। दीनू की निगाह बूढ़े के चेहरे पर गई तो वह सकते में आ गया। वह बूढ़ा और कोई नहीं, उस नगर का राजा था।

दीनू की समझ में कुछ भी न आया। उसे इस तरह उदास देखकर राजा ने कहा, "दीनू तुम्हें चिंता करने की जरूरत नहीं है। वह पोटली और तुम्हारे बैल सब मेरी

ही आज्ञा से चुराये गए हैं। मुझे अपने खजाने के लिए एक ऐसे खजांची की जरूरत थी, जो पूरी तरह ईमानदार हो। मैंने तुम्हारी ईमानदारी के बारे में सुना था। इस-लिए मैंने इस ढंग से तुम्हारी परीक्षा ली। मुझे खुशी है कि तुम उसमें खरे उतरे। अब मेहनत करके तुम्हें अपने बदन को सुखाने की जरूरत नहीं है। ईमानदारी से खजाने का काम सम्हालो। हम तुम्हें डेढ़ हजार रुपये माहवार देंगे।"

दीनू ने यह सुना तो वह जैसे आसमान से गिर पड़ा। डेढ़ हजार रुपए माहवार। कहां तो वह सोच रहा था कि डढ़ हजार के लिए उसे न जाने कितने महीनों तक अपनी और अपने परिवार की हड्डियों को पेलना पड़ेगा और कहां डेढ़ हजार रुपये माहवार की नौकरी और वह भी राजा के खजांची की।

दीनू की आंखों में खुशी के आंसू छलछला आये और उसने तुरंत राजा के पैर पकड़ लिये।

: ५ :

बलिदान

बहुत दिन की बात है। हमारे देश के उत्तर में एक बहुत ही छोटा-सा राज्य था। वहां का राजा बड़ा ही सीधा-सादा और न्यायी था। प्रजा का जरा-सा दु:ख भी

उसे बेचैन कर देता था। यही कारण था कि सारी प्रजा उसपर जान देती थी। उसकी जरा-सी गरदन हिलते ही हरकोई अपना सिर तक कटाने को तैयार रहता था।

एक बार की बात है। राजा को खबर मिली कि किसी दुश्मन ने उसके राज्य पर चढ़ाई कर दी है, जरा-सी देर में यह खबर आग की तरह नगर के एक छोर से दूसरे छोर तक फैल गई। ताशे और नगाड़ों पर चोट पड़ने लगीं। हरेक आदमी, जो तलवार उठा सकता था, सेना में शामिल हो गया। बूढ़ों ने भी तलवारें सम्हाल लीं। कवि और ब्राह्मणों की वीर वाणी से सारा नगर गूंज उठा। हजारों की संख्या में सैनिक इकट्ठे होकर लड़ाई के मैदान की ओर जाने लगे।

उस नगर में एक बहुत गरीब बुढ़िया भी रहती थी। उसका एक लड़का था। उमर थी बारह साल। बुढ़िया उसे बहुत चाहती थी। वही तो दुनिया में उसके लिए सबकुछ था, उसके बुढ़ापे का सहारा, उसकी आंखों की रोशनी। रोज सबेरे रात को वह घर से निकल पड़ता। दिनभर मजदूरी करता, बोझा ढोता और शाम तक जो कुछ मिल जाता उसीसे मां-बेटों का गुजारा चलता।

मगर जब बुढ़िया को इस संकट की खबर मिली तो उससे न रहा गया। दिल में एक अजीब-सी हलचल मच

गई। तरह-तरह के विचार उठने लगे--आज देश पर संकट आया है। दुश्मन ने चढ़ाई कर दी है। ऐसे समय में सबको चाहिए कि देश की रक्षा के लिए अपने प्राणों की भी बाजी लगा दें। तभी तो उसकी रक्षा हो सकती है।

यह विचार मन में आते ही वह तुरत अपने बच्चे को लेकर राजा के दरबार की ओर चल पड़ी। दिन छिपे का समय था। राजा मंत्री से लड़ाई के बारे में कुछ सलाह-मशविरा कर रहे थे। तभी बुढ़िया उनके सामने लाई गई। राजा ने पूछा, "कहो, बुढ़िया माई, कैसे आना हुआ?"

बुढ़िया ने अपने आने का कारण बताते हुए कहा, "महाराज, मेरे पास कोई ऐसी चीज नहीं है, जिसे देश के लिए दे सकूं? लेकिन जिस तरह दूसरी माताएं अपने-अपने बेटों को हथियारों से सजाकर लड़ाई में भेज रही हैं, उसी तरह मेरी भी इच्छा है कि मेरा यह इकलौता बच्चा देश की रक्षा में मदद करे।"

राजा ने बच्चे की ओर देखा। फिर आंखें फाड़कर बुढ़िया की तरफ देखने लगा। बुढ़िया यह क्या कह रही है? क्या यह जरा-सा बच्चा लड़ाई में जाने लायक है? राजा ने कहा, "माता, आपकी बात सुनकर मुझे बड़ी खुशी हुई है। आप-जैसी माताओं के कारण ही तो हमारा देश संसार में अपना सिर ऊंचा किये खड़ा है। परंतु

आपकी बात कैसे मानूं। यह बालक तो अभी बहुत छोटा है।"

बुढ़िया के चेहरे पर निराशा के काले बादल छा गए। दुःखी स्वर में बोली, "राजन्, बच्चा है तो क्या हुआ! क्या बच्चे को अपने देश की रक्षा करने का अधिकार नहीं है?"

"जरूर है।" राजा ने कहा, बुढ़िया के उदास चेहरे का राजा के दिल पर बड़ा असर पड़ा। कुछ रुककर राजा ने फिर कहा, "पर माई, यह तो सोचो कि यह लड़का तुम्हारे लिए अंधे की लकड़ी है। कहीं बाद में पछताना न पड़े, इसलिए मेरी राय है कि तुम इसे घर वापस ले जाओ।"

बुढ़िया की आंखों में आंसू आ गए। बोली, "महाराज, आपने मुझे नहीं समझा। मुझे बेटे से बढ़कर देश प्यारा है।"

हारकर राजा को आज्ञा देनी पड़ी।

बड़े जोर की लड़ाई हुई। तीर बरसने लगे। तलवारें आपस में टकरा-टकराकर झनझना उठीं। खून की नदियां बह चलीं। वीर कट-कटकर मरने लगे। और वह बच्चा भी लड़ते-लड़ते काम आया।

बच्चे के मरने की खबर राजा और बुढ़िया के कानों

तक भी पहुंची। बुढ़िया राजदरबार में आई और रोने लगी।

यह देखकर राजा बड़ा दुःखी हुआ। बोला, "देखो माई, मैंने तुमसे पहले ही मना किया था। लड़ाई का क्या ठिकाना।"

बुढ़िया ने कहा, "महाराज, आपने मुझे फिर गलत समझा। मुझे अपने बेटे के मरने का जरा भी गम नहीं है। यह तो मेरे लिए गर्व की बात है।"

राजा ने पूछा, "फिर तुम क्यों रोती हो?"

बुढ़िया बोली, "इसलिए कि वह मेरा इकलौता बेटा था। अब अगर देश पर फिर कोई संकट आया तो मैं दूसरा बेटा कहां से लाकर दूंगी?

1533

ಕರ್ನಾಟಕ ಗಾಂಧೀ ಸ್ಮಾರಕ ನಿಧಿ (ರಿ)
ಪರಿಗ್ರಹಣ ಸಂಖ್ಯೆ:
ACC. No.: 9703
ಗಾಂಧೀ ಗ್ರಂಥಾಲಯ, ಬೆಂಗಳೂರು-1

समाज विकास - माला की पुस्तकें

१ बदरीनाथ
२ जंगल की सैर
३ भीष्म पितामह
४ शिवि और दधीचि
५ विनोबा और भूदान
६ कबीर के बोल
७ गांधीजी का विद्यार्थी-जीवन
८. गंगाजी
९ गौतम बुद्ध
१० निषाद और शबरी
११. गांव सुखी, हम सुखी
१२. कितनी जमीन ?
१३. ऐसे थे सरदार
१४. चैतन्य महाप्रभु
१५. कहावतों की कहानियां
१६. सरल व्यायाम
१७. द्वारका
१८. बापू की बातें
१९. बाहुबली और नेमिनाथ
२०. तंदुरुस्ती हजार नियामत
२१. बीमारी कैसे दूर करें ?
२२. माटी की मूरत जागी
२३. गिरिधर की कुंडलियां
२४. रहीम के दोहे
२५. गीता-प्रवेशिका
२६. तुलसी - मानस - मोती
२७. दादू की वाणी
२८. नजीर की नज्में
२९. संत तुकाराम
३०. हजरत उमर
३१. बाजीप्रभु देशपांडे
३२. तिरुवल्लुवर
३३. कस्तूरबा गांधी
३४. शहद की खेती
३५. कावेरी
३६. तीर्थराज प्रयाग
३७. तेल की कहानी
३८. हम सुखी कैसे रहें ?
३९. गो-सेवा क्यों ?
४०. कैलास-मानसरोवर
४१. अच्छा किया या बुरा ?
४२. नरसी महेता
४३. पंढरपुर
४४. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती
४५. संत ज्ञानेश्वर
४६. धरती की कहानी
४७, राजा भोज
४८. ईश्वर का मंदिर
४९. गांधीजी का संसार-प्रवेश
५०. ये थे नेताजी
५१. रामेश्वरम्
५२. कब्रों का विलाप
५३. रामकृष्ण परमहंस
५४. समर्थ रामदास
५५. मीरा के पद
५६. मिल-जुलकर काम करो
५७. कालापानी
५८. पावंभर आटा
५९. सवेरे की रोशनी
६०. भगवान के प्यारे
६१. हारूं-अल-रशीद
६२. तीर्थंकर महावीर
६३. हमारे पड़ोसी
६४. आकाश की बातें
६५. सच्चा तीरथ
६६. हाजिर जवाबी
६७. सिंहासन-बत्तीसी भाग १
६८. सिंहासन-बत्तीसी भाग २
६९. नेहरूजी का विद्यार्थी - जीवन
७०. मूरखराज
७१. नाना फडनवीस
७२. गुरु नानक

मूल्य प्रत्येक का छः आना

सस्ता साहित्य मण्डल

छः आना